Taittirīya-Brāhmaṇa

Book 3, Chapter 5

Edited by Subramania Sarma, Chennai

Final proofread version, 1st April 2005

[[3-5-1-1]]

स॒त्यं प्रप॑द्ये।

ऋ॒तं प्रप॑द्ये।

अ॒मृ॒तं प्रप॑द्ये।

प्र॒जाप॑तेः प्रि॒यां त॒नु॒व॒मना॑र्ता॒ँ प्रप॑द्ये।

इ॒द॒म॒हं प॑ञ्चद॒शेन॒ वज्रे॑ण।

द्वि॒षन्तं॒ भ्रातृ॑व्यमव॑क्रामामि।

यो॑ऽस्मान्द्वेष्टि॑।

यं च॑ व॒यं द्वि॒ष्मः।

भूर्भु॒वः सुव॑ः।

हिम्॥ १॥

स॒त्यं द॒श॑॥ १॥

[[3-5-2-1]]

प्र वो॑ वाजा॑ अ॒भिद्य॑वः।

ह॒विष्म॑न्तो घृ॒ताच्या॑।

दे॒वाञ्जि॑गाति सु॒म्न॒युः।

अग्न॒ आया॑हि वी॒तये॑।

गृ॒णा॒नो ह॒व्यदा॑तये।

निहोता॑ सत्सि ब॒र्हिषि॑।

तं त्वा॑ स॒मिद्भि॑रङ्गिरः।

घृ॒तेन॑ वर्धयामसि।

बृ॒हच्छो॑चा यविष्ठ्य।

स नः॑ पृ॒थु श्र॒वाय्य॑म्॥ १॥

[[3-5-2-2]]

अच्छा देव विवाससि।
बृहदग्ने सुवीर्यम्।
ईडेन्यो नमस्यस्तिरः।
तमांꣳसि दर्शतः।
समग्निरिध्यते वृषा।
वृषो अग्निः समिध्यते।
अश्वो न देववाहनः।
तꣳ हविश्मन्त ईडते।
वृषणं त्वा वयं वृषन्।
वृषाणः समिधीमहि॥ २॥

[[3-5-2-3]]
अग्ने दीद्यतं बृहत्।
अग्निं दूतं वृणीमहे।
होतारं विश्ववेदसम्।
अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम्।
समिध्यमानो अध्वरे।
अग्निः पावक ईड्यः।
शोचिष्केशस्तमीमहे।
समिद्धो अग्न आहुत।
देवान्यक्षि स्वध्वर।
त्वꣳ हि हव्यवाडसि।
आजुहोत दुवस्यत।
अग्निं प्रयत्यध्वरे।
वृणीध्वꣳ हव्यवाहनम्।
त्वं वरुण उत मित्रो अग्ने।
त्वां वर्धन्ति मतिभिर्वसिष्ठाः।
त्वे वसु सुषणनानि सन्तु।
यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ३॥
श्रवय्यमिधीमह्यसि सप्त च॥ २॥

[[3-5-3-1]]

अग्ने॑ म॒हाꣳ अ॑सि ब्राह्मण भारत।

असा॒वसौ᳚।

दे॒वेद्धो॒ मन्वि॑द्धः।

ऋषि॑ष्टु॒तो॒ विप्रा॑नुमदि॒तः।

क॒वि॒श॒स्तो ब्रह्म॑सꣳशितो घृ॒ताह॑वनः।

प्र॒णीर्य॒ज्ञाना᳚म्।

र॒थीर॑ध्व॒राणा᳚म्।

अ॒तू॒र्तो᳚ होता᳚।

तू॒र्णि॑र्ह॑व्य॒वाट्।

आस्पात्रं॑ जु॒हूर्दे॒वाना᳚म्॥ १॥

[[3-5-3-2]]

च॒म॒सो दे॑वपान॑ः।

अ॒राꣳ इ॑वाग्ने ने॒मिर्दे॒वाꣳस्त्वं प॑रि॒भूर॑सि।

आव॑ह दे॒वान्यज॑मानाय।

अ॒ग्निम॑ग्न॒ आव॑ह।

सोम॒माव॑ह।

अ॒ग्निमाव॑ह।

प्र॒जाप॑ति॒माव॑ह।

अ॒ग्नीषोमा॒वाव॑ह।

इ॒न्द्रा॒ग्नी आव॑ह।

इन्द्र॒माव॑ह।

म॒हे॒न्द्रमाव॑ह।

दे॒वाꣳ आ᳚ज्य॒पाꣳ आव॑ह।

अ॒ग्निꣳ हो॒त्रायाव॑ह।

स्वं म॑हि॒मान॒माव॑ह।

आ चा᳚ग्ने दे॒वान्व॑ह।

सु॒यजा॑ च यज जातवेदः॥ २॥

दे॒वाना॒मिन्द्र॒माव॑ह॒ षड्ढ॥ ३॥

[[3-5-4-1]]

अ॒ग्निर्होता॑ वे॒त्व॒ग्निः।

हो॒त्रं वे॑त्तु प्रावि॒त्रम्।

स्मो व॒यम्।

सा॒धु ते॑ यजमान दे॒वता॑।

घृ॒तव॑तीमध्वर्यो स्रु॒चमास्य॑स्व।

दे॒वा॒यु॒वं॑ वि॒श्ववा॑राम्।

ईडा॑महै दे॒वाꣳ ई॒डेऽन्यान्॑।

न॒म॒स्याम॑ नम॒स्यान्॑।

यजा॑म य॒ज्ञियान्॑॥ १॥

अ॒ग्निर्होता॒ नव॑॥ ४॥

[[3-5-5-1]]

स॒मिधो॑ अग्न आज्य॑स्य वियन्तु।

तनू॒नपा॑दग्न॒ आज्य॑स्य वेतु।

इ॒डो अ॑ग्न॒ आज्य॑स्य वियन्तु।

ब॒र्हिर॑ग्न आज्य॑स्य वेतु।

स्वाहा॒ऽग्निम्।

स्वाहा॒ सोम॑म्।

स्वाहा॒ऽग्निम्।

स्वाहा॑ प्र॒जाप॑तिम्।

स्वाहा॒ग्नीषोमौ॑।

स्वाहे॑न्द्रा॒ग्नी।

स्वाहेन्द्र॑म्।

स्वाहा॑ मह॒ेन्द्रम्।

स्वाहा॑ दे॒वाꣳ आ॑ज्य॒पान्।

स्वाहा॒ऽग्निꣳ हो॒त्राज्जु॑षा॒णाः।

अग्न॒ आज्य॑स्य वियन्तु॥ १॥

इ॒न्द्रा॒ग्नी पञ्च॑ च॥ ५॥

[[3-5-6-1]]

अ॒ग्निर्वृ॒त्राणि॑ जङ्घनत्।
द्र॒वि॒ण॒स्युर्वि॑प॒न्यया᳚।
समि॑द्धः शु॒क्र आहु॑तः।
जु॒षा॒णो अ॒ग्निराज्य॑स्य वेतु।
त्वꣳ सो॑मासि॒ सत्प॑तिः।
त्वꣳ राजो॒त वृ॒त्र॒हा।
त्वं भ॒द्रो अ॑सि॒ क्रतुः॑।
जु॒षा॒णः सोम॒ आज्य॑स्य ह॒विषो॑ वेतु।
अ॒ग्निः प्र॒त्नेन॒ जन्म॑ना।
शुम्भा॑नस्त॒नुव॒ꣳ॒ स्वाम्।
क॒विर्विप्रे॑ण वावृधे।
जु॒षा॒णो अ॒ग्निराज्य॑स्य वेतु।
सोम॑ गी॒र्भिष्ट्वा॑ व॒यम्।
व॒र्धया॑मो वचो॒विदः॑।
सु॒मृ॒डी॒को न॒ आवि॑श।
जु॒षा॒णः सोम॒ आज्य॑स्य ह॒विषो॑ वेतु॥ १॥
स्वाꣳ षट्च॥ ६॥

[[3-5-7-1]]

अ॒ग्निर्मू॒र्धा दि॒वः क॒कुत्।
पतिः॑ पृथि॒व्या अ॒यम्।
अ॒पाꣳ रेता॑ꣳसि जिन्वति।
भुवो॑ य॒ज्ञस्य॒ रज॑सश्च ने॒ता।
यत्रा॑ नि॒युद्भिः॒ सच॑से शि॒वाभिः॑।
दि॒वि मू॒र्धानं॑ दधिषे सुव॒र्षाम्।
जि॒ह्वाम॑ग्ने चकृषे हव्य॒वाह᳚म्।
प्रजा॑पते॒ न त्वदे॒तान्य॒न्यः।
विश्वा॑ जा॒तानि॒ परि॒ ता ब॑भूव।
यत्का॑मास्ते जुहु॒मस्तन्नो॑ अस्तु॥ १॥

[[3-5-7-2]]

व॒यꣳ स्या॑म॒ पत॑यो रयी॒णाम्।
स वे॑द पु॒त्रः पि॒तर॒ꣳ स मा॒तर॑म्।
स सू॒नुर्भु॑व॒त्स भु॑व॒त्पुन॑र्म॒घः।
स द्यामौर्णो॑द॒न्तरि॑क्ष॒ꣳ स सुवः॑।
स विश्वा॒ भुवो॑ अभव॒त्स आभ॑वत्।
अग्नी॑षोमा॒ सवे॑दसा।
सहू॑ती वनत॒ं गिरः॑।
सं दे॑व॒त्रा ब॑भूवथुः।
यु॒वमे॒तानि॑ दि॒वि रो॑च॒नानि॑।
अ॒ग्निश्च॑ सोम॒ सक्र॑तू अधत्तम्॥ २॥

[[3-5-7-3]]
यु॒वꣳ सिन्धू॒ꣳर॒भिश॑स्तेरव॒द्यात्।
अग्नी॑षोमा॒वमु॑ञ्चतं गृभी॒तान्।
इन्द्रा॑ग्नी रोच॒ना दि॒वः।
परि॒ वाजे॑षु भूषथः।
तद्वा॑ञ्चेति॒ प्रवी॒र्य॑म्।
श्नथ॑द्वृत्रमुत स॑नोति॒ वाज॑म्।
इन्द्रा॒यो अ॒ग्नी सहु॑री सप॒र्यात्।
इ॒र॒ज्यन्ता॑ वस॒व्य॑स्य भूरेः॑।
सह॑स्तमा॒ सह॑सा वाज॒यन्ता॑।
एन्द्र॑ सान॒सिꣳ र॒यिम्॥ ३॥

[[3-5-7-4]]
स॒जित्वा॑नꣳ सदा॒सह॑म्।
वर्षि॑ष्ठमू॒तये॑ भर।
प्रस॑साहिषे पुरुहू॒त शत्रू॑न्।
ज्येष्ठ॑स्ते॒ शुष्म॑ इ॒ह रा॒तिर॑स्तु।
इन्द्राभ॑र॒ दक्षि॑णेना॒ वसू॑नि।
पति॒ः सिन्धू॑नामसि रे॒वती॑नाम्।
म॒हाꣳ इन्द्रो॒ य ओज॑सा।

प॒र्जन्यो॑ वृ॒ष्टिमा॑ꣳ इ॑व।
स्तोमै॑र्व॒त्सस्य॑ वावृधे।
म॒हाꣳ इन्द्रो॑ नृ॒वदाच॑र्षणि॒प्राः॥ ४॥

[[3-5-7-5]]
उ॒त द्वि॒बर्हा॑ अ॒मिनः॒ सहो॑भिः।
अ॒स्म॒द्रि॒यग्वावृधे वी॒र्या॑य।
उ॒रुः पृ॒थुः सु॒कृ॑तः क॒र्तृभि॑र्भू॒त्।
पि॒प्री॒हि दे॒वाꣳ उ॑श॒तो य॑विष्ठ।
वि॒द्वाꣳ ऋ॒तूꣳर्ऋ॑तुपते यजे॒ह।
ये दैव्या॑ ऋ॒त्विज॒स्तेभि॑रग्ने।
त्वꣳ होतॄ॑णाम॒स्या य॑जिष्ठः।
अ॒ग्निꣴ स्वि॑ष्ट॒कृत॑म्।
अया॑ड॒ग्निर॒ग्नेः प्रि॒या धामा॑नि।
अया॒ट्त्सोम॑स्य प्रि॒या धामा॑नि॥ ५॥

[[3-5-7-6]]
अया॑ड॒ग्नेः प्रि॒या धामा॑नि।
अया॑ट्प्र॒जाप॑तेः प्रि॒या धामा॑नि।
अया॑ड॒ग्नीषोम॑योः प्रि॒या धामा॑नि।
अया॑डिन्द्रा॒ग्नियोः प्रि॒या धामा॑नि।
अया॒डिन्द्र॑स्य प्रि॒या धामा॑नि।
अया॑ण्महे॒न्द्रस्य॑ प्रि॒या धामा॑नि।
अया॑ड्दे॒वाना॑माज्य॒पाना॑ प्रि॒या धामा॑नि।
यक्ष॑द॒ग्नेर्होतुः॑ प्रि॒या धामा॑नि।
यक्ष॒त्स्वं म॑हि॒मान॑म्।
आय॑जता॒मेज्या॒ इषः॑।
कृ॒णोतु॒ सो अ॑ध्व॒रा जा॒तवे॑दाः।
जु॒षता॑ꣳ ह॒विः।
अग्ने॒ यद॒द्य वि॒शो अ॑ध्वरस्य होतः।
पाव॑क शोचे॒ वेष्ट्वꣳ हि यज्वा॑।

ऋता यजासि महिना वियद्भूः।
हव्या वह यविष्ठया ते अद्य॥ ६॥
अस्त्वधत्तꣳ रयिं चर्षणिप्रास्सोमास्य प्रिया धामानीषष्वद्वे॥ ७॥

[[3-5-8-1]]
उपहूतꣳ रथन्तरꣳ सह पृथिव्या।
उप मा रथन्तरꣳ सह पृथिव्या ह्वयताम्।
उपहूतं वामदेव्यꣳ सहान्तरिक्षेण।
उप मा वामदेव्यꣳ सहान्तरिक्षेण ह्वयताम्।
उपहूतं बृहत्सह दिवा।
उप मा बृहत्सह दिवा ह्वयताम्।
उपहूताः सप्त होत्राः।
उप मा सप्तहोत्रा ह्वयन्ताम्।
उपहूता धेनुः सहर्षभा।
उप मा धेनुः सहर्षभा ह्वयताम्॥ १॥

[[3-5-8-2]]
उपहूतो भक्षः सखा।
उप मा भक्षः सखा ह्वयताम्।
उपहूताँ४ हो।
इडोपहूता।
उपहूतेडा।
उपो अस्माꣳ इडा ह्वयताम्।
इडोपहूता।
उपहूतेडा।
मानवी घृतपदी मैत्रावरुणी।
ब्रह्मदेवकृतमुपहूतम्॥ २॥

[[3-5-8-3]]
दैव्या अध्वर्यव उपहूताः।
उपहूता मनुष्याः।
य इमं यज्ञमवान्।

ये यज्ञपतिं वर्धान्।
उपहूते द्यावापृथिवी।
पूर्वजे ऋतावरी।
देवी देवपुत्रे।
उपहूतोऽयं यजमानः।
उत्तरस्यां देवयज्यायामुपहूतः।
भूयसि हविष्करण उपहूतः।
दिव्ये धामन्नुपहूतः।
इदं मे देवा हविर्जुषन्तामिति तस्मिन्नुपहूतः।
विश्वमस्य प्रियमुपहूतम्।
विश्वस्य प्रियस्योपहूतस्योपहूतः॥ ३॥
सहर्षभा ह्वयतामुपहूतꣳ हविष्करण उपहूतश्चत्वारि च॥ ८॥

[[3-5-9-1]]
देवं बर्हिः।
वसुवने वसुधेयस्य वेतु।
देवो नराशꣳसः।
वसुवने वसुधेयस्य वेतु।
देवो अग्निः स्विष्टकृत्।
सुद्रविणा मन्द्रः कविः।
सत्यमन्माऽऽयजी होता।
होतुर्होतुरायजीयान्।
अग्ने यान्देवानयाट्।
याꣳ अपिप्रेः।
ये ते होत्रे अमत्सत।
ताꣳ ससनुषीꣳ होत्रां देवंगमाम्।
दिवि देवेषु यज्ञमेरयेमम्।
स्विष्टकृच्चाग्ने होताऽभुः।
वसुवने वसुधेयस्य नमोवाके वीहि॥ १॥
अपिप्रे पञ्च च॥ ९॥

[[3-5-10-1]]

इ॒दं द्या॑वापृथिवी भ॒द्रम॑भूत्।

आर्ध्म᳚ सूक्तवा॒कम्।

उ॒त न॑मोवा॒कम्।

ऋ॒ध्यास्म॑ सू॒क्तोच्य॑मग्ने।

त्वꣳ सू᳚क्तवाग॑सि।

उप॑श्रितो दि॒वः पृ॑थि॒व्योः।

ओम॑न्वती ते॒ऽस्मिन्य॒ज्ञे य॑जमान॒ द्यावा॑पृथि॒वी स्ता᳚म्।

श॒ङ्गये जी॒रदा॑नू।

अत्र॑स्नू॒ अप्र॑वेदे।

उ॒रुग॑व्यूती अभ॒यं कृ॒तौ᳚॥ १॥

[[3-5-10-2]]

वृ॒ष्टिद्या॑वारी॒त्या॑पा।

श॒म्भुवौ᳚ मयो॒भुवौ᳚।

ऊर्ज᳚स्पती च॒ पय॑स्वती च।

सू॒प॒च॒र॒णा च॑ स्वधिच॒र॒णा च॑।

तयो᳚रा॒विदि॑।

अ॒ग्निरि॒दꣳ ह॒विर॑जुषत।

अवी॑वृधत॒ महो॒ज्यायो॑ऽकृत।

सोम॑ इ॒दꣳ ह॒विर॑जुषत।

अवी॑वृधत॒ महो॒ज्यायो॑ऽकृत।

अ॒ग्निरि॒दꣳ ह॒विर॑जुषत॥ २॥

[[3-5-10-3]]

अवी॑वृधत॒ महो॒ज्यायो॑ऽकृत।

प्र॒जाप॑तिरि॒दꣳ ह॒विर॑जुषत।

अवी॑वृधत॒ महो॒ज्यायो॑ऽकृत।

अ॒ग्नीषोमा॑वि॒दꣳ ह॒विर॑जुषेताम्।

अवी॑वृधेतां॒ महो॒ज्यायो᳚ऽक्राताम्।

इ॒न्द्रा॒ग्नी इ॒दꣳ ह॒विर॑जुषेताम्।

अवीवृधेतां महोज्यायोऽक्राताम्।
इन्द्र इदꣳ हविरजुषत।
अवीवृधत महोज्यायोऽकृत।
महेन्द्र इदꣳ हविरजुषत॥ ३॥

[[3-5-10-4]]
अवीवृधत महोज्यायोऽकृत।
देवा आज्यपा आज्यमजुषन्त।
अवीवृधन्त महोज्यायोऽक्रत।
अग्निर्होत्रेणेदꣳ हविरजुषत।
अवीवृधत महोज्यायोऽकृत।
अस्यामृधद्धोत्रायां देवंगमायाम्।
आशास्तेऽयं यजमानोऽसौ।
आयुराशास्ते।
सुप्रजास्त्वमाशास्ते।
सजातवनस्यामाशास्ते॥ ४॥

[[3-5-10-5]]
उत्तरां देवयज्यामाशास्ते।
भूयो हविष्करणमाशास्ते।
दिव्यं धामाशास्ते।
विश्वं प्रियमाशास्ते।
यदनेन हविषाऽऽशास्ते।
तदश्यात्तदृध्यात्।
तदस्मै देवा रासन्ताम्।
तदग्निर्देवो देवेभ्यो वनते।
वयमग्नेर्मानुषाः।
इष्टं च वीतं च।
उभे च नो द्यावापृथिवी अꣳहसः स्पाताम्।
इह गतिर्वामस्येदं च।
नमो देवेभ्यः॥ ५॥

अभयंकृतावकृताग्निरिदꣳ हविरजुषत महेन्द्र इदꣳ हविरजुषत सजातवनस्यामाशास्ते वीतं च त्रीणि च॥ १०॥

[[3-5-11-1]]

तच्छं योरावृणीमहे।
गातुं यज्ञाय।
गातुं यज्ञपतये।
दैवीं स्वस्तिरस्तु नः।
स्वस्तिर्मानुषेभ्यः।
ऊर्ध्वं जिगातु भेषजम्।
शं नो अस्तु द्विपदे।
शं चतुष्पदे॥ १॥
तच्छंयोरष्टौ॥ ११॥

[[3-5-12-1]]

आप्यायस्व सं ते।
इह त्वष्टारमग्रियं तन्नस्तुरीपम्।
देवानां पत्नीरुशतीरवन्तु नः।
प्रावन्तु नस्तुजये वाजसातये।
याः पार्थिवासो या अपामपि व्रते।
ता नो देवीः सुहवाः शर्म यच्छत।
उतग्ना वियन्तु देवपत्नीः।
इन्द्राण्यग्नाय्यश्विनी राट्।
आ रोदसी वरुणानी शृणोतु।
वियन्तु देवीर्य ऋतुर्जनीनाम्।।
अग्निर्होता गृहपतिः स राजा।
विश्वा वेद जनिमा जातवेदाः।
देवानामुत यो मर्त्यानाम्।
यजिष्ठः स प्रयजतामृतावा।
वयमु त्वा गृहपते जनानाम्।
अग्ने अकर्म समिधा बृहन्तम्।

अस्थूरिणो गार्हपत्यानि सन्तु।
तिग्मेन नस्तेजसा सꣳशिशाधि॥ १॥
जनीनामष्टौ च॥ १२॥

[[3-5-13-1]]
उपहूतꣳ रथन्तरꣳ सह पृथिव्या।
उप मा रथन्तरꣳ सह पृथिव्या ह्वयताम्।
उपहूतं वामदेव्यꣳ सहान्तरिक्षेण।
उप मा वामदेव्यꣳ सहान्तरिक्षेण ह्वयताम्।
उपहूतं बृहत्सह दिवा।
उप मा बृहत्सह दिवा ह्वयताम्।
उपहूताः सप्तहोत्राः।
उप मा सप्तहोत्रा ह्वयन्ताम्।
उपहूता धेनुः सहर्षभा।
उप मा धेनुः सहर्षभा ह्वयताम्॥ १॥

[[3-5-13-2]]
उपहूतो भक्षः सखा।
उप मा भक्षः सखा ह्वयताम्।
उपहूताँ४ हो।
इडोपहूता।
उपहूतेडा।
उपो अस्माꣳ इडा ह्वयताम्।
इडोपहूता।
उपहूतेडा।
मानवी घृतपदी मैत्रावरुणी।
ब्रह्म देवकृतमुपहूतम्॥ २॥

[[3-5-13-3]]
दैव्या अध्वर्यव उपहूताः।
उपहूता मनुष्याः।
य इमं यज्ञमवान्।

ये यज्ञपत्नीं वर्धान्।
उपहूते द्यावापृथिवी।
पूर्वजे ऋतावरी।
देवी देवपुत्रे।
उपहूतेयं यजमाना।
इन्द्राणीवाविधवा।
अदितिरिव सुपुत्रा।
उत्तरस्यां देवयज्यायामुपहूता।
भूयसि हविष्करण उपहूता।
दिव्ये धामन्नुपहूता।
इदं मे देवा हविर्जुषन्तामिति तस्मिन्नुपहूता।
विश्वमस्याः प्रियमुपहूतम्।
विश्वस्य प्रियस्योपहूतस्योपहूता॥ ३॥
सहर्षभा ह्वयतामुपहूतꣳ सुपुत्रा षट्च॥ १३॥
सत्यं प्रवोऽग्ने महानग्निर्होता समिधोऽग्निर्वृत्राण्यग्निर्मूर्धोपहूतं देवं बर्हिरिदं द्यावापृथिवी तच्छंयोरा
प्यायस्वोपहूतं त्रयोदश॥ १३॥
सत्यं वयꣳ स्याम वृष्टिद्यावा त्रिꣳशत्॥ ३०॥